NOTIFICATION

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित

आचार्य प्रभाचन्द्र द्वारा रचित **प्रमेयकमलमार्तण्ड** पर **१० दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला**

(10 Day National Workshop on a Classical Texts of Jaina Nyāya 'PRAMEYA-KAMALA-MĀRTAṆḌA' by Prabhācandrācārya (20th-29th September, 2024)

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी के विद्वान् **आचार्य प्रभाचन्द्र** द्वारा रचित जैन न्याय के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ **प्रमेयकमलमार्तण्ड** पर **२०-२९ सितम्बर, २०२४** तक एक **१० दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला** का आयोजन कर रहा है। जैन न्याय विद्या की एक विशाल परम्परा है, जिसके प्रतिष्ठापकों में आचार्य समन्तभद्र **(६०० ई.)**, आचार्य अंकलकदेव **(७२०-७८० ई.)** तथा सिद्धसेन दिवाकर **(पांचवीं शती)** का नाम अग्रगण्य है। इन्हीं श्रेष्ठ तार्किकों की परम्परा में **आचार्य प्रभाचन्द्र (९८०-१०६५ ई.)** का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। आचार्य प्रभाचन्द्र ने आचार्य अंकलक देव कृत **लघीयस्त्रय** की विस्तृत व्याख्या के रूप में **न्यायकुमुदचन्द** जैसी महनीय टीका, आचार्य माणिक्यनन्दि कृत **परीक्षामुखसूत्र** नामक लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण सूत्रग्रन्थ पर **प्रमेयकमलमार्तण्ड** नामक १२,००० श्लोक प्रमाण प्रमेयों से भरपूर विस्तृत टीका लिख कर एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। श्री प्रभाचन्द्राचार्य कृत ये दोंनो ग्रन्थ टीका ग्रन्थ अवश्य हैं, किन्तु विषय की विविधता और मौलिक चिन्तन के कारण अपने आप में पूर्ण एवं स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

विषय-परिचय एवं कार्यशाला का उद्देश्य (Introduction and objective of the workshop)

जैन विद्या की विविध विधाओं में जैन न्याय का एक विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैन धर्म की अप्रतिम चिन्तन प्रणाली और ज्ञान-मीमांसा विषयक साहित्य ने सम्पूर्ण भारतीय मीमांसा को न केवल प्रभावित किया अपितु गौरवान्वित भी किया है। किन्तु भारतीय दर्शन के ज्ञानमीमांसा विषयक ग्रन्थों में जैन न्याय को यथार्थ रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया है। भारतीय दर्शन में सामान्यत: प्रमा के करण को प्रमाण कहा गया है-**प्रमाकरणं प्रमाणम्** (केशव मिश्र, तर्कभाषा, प्रमाण निरूपण), **'प्रमीयतेऽनेन इति प्रमाणम'**, आदि। परन्तु '**सम्यग्ज्ञानं प्रमाणं**'(आप्तमीमांसा १०१) अर्थात् सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण है' इस जैन दर्शन की प्रमाण विषयक परिभाषा को भारतीय ज्ञानमीमांसा द्वारा स्वीकृति प्राय: नहीं मिली। आचार्य प्रभाचन्द्र ने **'ज्ञानं प्रमाणं'** को और स्पष्ट करते हुये कहा- **'स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञानं प्रमाणं'** अर्थात् स्व का और अन्य घटादि पदार्थों को संशयादि से रहित निश्चय करने वाला ज्ञान प्रमाण है। प्रभाचन्द्र ने गृहीतग्राही ज्ञान को प्रमाण माना है। उन्होंने प्रमाण में अपूर्वार्थ की ग्राहिता को कथंचित् स्वीकार किया है। उनके अनुसार प्रमाण कथंचित् विशिष्ट प्रमा का जनक होकर अपूर्व अर्थ का ग्राही हो सकता है किन्तु सर्वथा अपूर्व अर्थ का ग्राही नहीं। इस प्रमाण के पांच विशेषण हैं- स्व, अपूर्व, अर्थ, व्यवसायात्मक और ज्ञान, इनमें स्वविशेषण द्वारा ज्ञान को सर्वथा परोक्ष मानने वाले मीमांसक का तथा दूसरे ज्ञान से उसे ग्राहक मानने वाले नैयायिक का खण्डन होता है, अर्थात् ज्ञान 'स्व' को जानने वाला है, अपूर्व विशेषण से धारावाहिक ज्ञान का निरसन किया है, तथा सर्वथा ही अपूर्व वस्तु का ग्राहक प्रमाण

होता है, ऐसा मानने वाले भाट्ट मत का निरसन किया है, अर्थात् प्रमाण कथंचित् अपूर्व अर्थ का ग्राहक है, अर्थ- इस विशेषण से बौद्धों के प्रमाण का खण्डन होता है, क्योंकि विज्ञानाद्वैतवादी, चित्राद्वैतवादी ज्ञान के द्वारा ज्ञान का मात्र ग्रहण होता है क्योंकि ज्ञान मात्र ही तत्त्व है, ऐसा वे मानते हैं, उन्हें समझाने के लिए कहा है कि ज्ञान अर्थ को-पदार्थ को जानने वाला है। क्योंकि बौद्ध ज्ञान को निर्विकल्प-अनिश्चयात्मक मानते हैं इसलिए उसका खण्डन करने के लिए प्रमाण के लक्षण में 'व्यवसायात्मकम्' यह विशेषण प्रस्तुत किया है, ज्ञान विशेषण तो सन्निकर्ष, कारकसाकल्य इन्द्रिय वृत्ति, ज्ञातृ व्यापार आदि अज्ञानरूप वस्तु को ही प्रमाण मानने वाले वैशेषिक आदि का निरसन करने के लिए उपस्थित किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य प्रभाचन्द्र ने जैन ज्ञान मीमांसा विषयक मत की प्रतिष्ठा करने के लिये भारतीय दर्शनों की प्राय: सभी शाखाओं की ज्ञान और प्रमाण प्रमुख मान्यताओं की उनके मूल स्रोतों के आधार पर गहन अध्ययन पूर्वक पूर्वपक्ष के रूप में प्रस्तुत किया है। तदन्तर न्याय की कसौटी पर परख कर प्रबल प्रमाणों के आधार पर अन्य दार्शनिकों के सिद्धान्तों का (पूर्व पक्ष) का खण्डन करते हुए जैन दर्शन के पक्ष (उत्तर पक्ष) को अकाट्य युक्तियों और प्रमाणों द्वारा प्रस्तुत किया है। **प्रमेयकमलमार्त्तण्ड** की विशेषता है कि वह प्रमाण की कोटि में आने वाले जितने भी ज्ञेय पदार्थ हैं उनको कमलों की भाँति प्रकाशित करता है। यह पूरा ग्रन्थ प्रारम्भ से लेकर अन्त तक न्याय शैली से परिपूर्ण है। नैयायिकों तथा मीमांसकों आदि द्वारा जैन ज्ञानमीमांसा के पक्ष को सम्यक्तया प्रस्तुत न करने के कारण एतद् विषयक अनेक भ्रम फैले हुए हैं। अत: यह आवश्यक हो जाता है कि जैन ज्ञान मीमांसा विषयक फैली हुई मिथ्या धारणाओं का निराकरण किया जाय और प्राचीन जैनाचार्यों द्वारा सृजित न्याय विद्या के महत्त्वपूर्ण विषय को सरल, सुबोध और आधुनिक शैली में बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रस्तुत किया जाय। **प्रमेयकमलमार्तण्ड** एक ऐसा ग्रंथ है जिसके अध्ययन से सम्पूर्ण भारतीय दर्शनों के न्याय विषयक हार्द को समझा जा सकता है। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

प्राध्यापकगण एवं तदनुसार विषय विभाजन (Resource Persons and Thematic split and apportioning of its part in resource persons):

१.प्रोफसर सच्चिदानन्द मिश्र (सदस्य सचिव, भारतीय दर्शनिक अनुसंधान परिषद्)

प्रथम परिच्छेद -प्रमाणसामान्यलक्षणसूत्र, कारकसाकल्यवाद (नैयायिक-अभिमत), सन्निकर्षवाद (वैशेषिक-अभिमत), इन्द्रियवृत्तिविचार (सांख्य अभिमत), ज्ञातृव्यापारविचार (प्रभाकर मीमांसाभिमत), प्राप्ति परिहार विचार- प्रमाण में हिताहितप्राप्ति परिहारविचार, बौद्धाभिमत निर्विकल्पक प्रत्यक्ष का खण्डन, शब्दाद्वैतविचार (भर्तहरि अभिमत), विपर्यय ज्ञान में अख्यात्यादि विचार- अनिर्वचनीयार्थख्यातिविचार, स्मृतिप्रमोषविचार, अपूर्वार्थविचार (मीमांसा-अभिमत),

२. प्रोफसर राजाराम शुक्ल (पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

द्वितीय परिच्छेद – प्रत्यक्षैकप्रमाणवाद (चार्वाक-अभिमत), प्रमेयद्वित्वात् प्रमाणद्वित्वविचार (बौद्ध-अभिमत), आगमविचार, उपमानविचार, अर्थापत्तिविचार, अभावविचार (मीमांसा-अभिमत), अर्थापत्ति का अनुमान में और अभाव का प्रत्यक्ष आदि में अन्तर्भाव (मीमांसा-अभिमत), शक्तिस्वरूपविचार (नैयायिक-अभिमत), विशदत्वविचार, चक्षुःसन्निकर्षवाद।

३.प्रोफसर श्रेयांस कुमार सिंघई (पूर्व संकाय प्रमुख- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर)

तृतीय परिच्छेद- स्मृतिप्रामाण्यविचार, प्रत्यभिज्ञानप्रामाण्यविचार, तर्कस्वरूपविचार, हेतु में त्रैरूप्यनिरास, हेतु में पाञ्चरूप्यनिरास, धर्मिस्वरूपविचार, पक्ष-वचन का समर्थन, वेदापौरुषेयत्वविचार, शब्दनित्यत्ववाद, अपोहवाद और स्फोटवाद ।

४. प्रोफेसर धर्मचन्द जैन (पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास वि. जोधपुर)

तृतीय परिच्छेद- सांव्यवहारिकप्रत्यक्षविचार, अर्थकारणतावाद, आलोककारणतावाद, मुख्यप्रत्यक्षविचार, कर्मों में पौदगलिकत्व की सिद्धि, सर्वज्ञत्ववाद, ईश्वरवाद, प्रकृतिकर्तृत्ववाद, कवलाहारविचार, स्त्रीमुक्तिविचार, भारतीय दर्शनों में मोक्षस्वरूपविचार।

५.प्रोफेसर प्रद्युम्न शाह सिंह (अध्यक्ष- जैन-बौद्ध दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का. हि. वि.वि. वाराणसी)

चतुर्थ परिच्छेद - सामान्यस्वरूपविचार, ब्राह्मणत्वजातिनिरास, सम्बन्धसद्भाववाद, अन्वयी आत्मा की सिद्धि, अर्थ में सामान्यविशेषात्मकत्व की सिद्धि, वस्तु को भेदाभेदात्मक मानने में संशयादि दोषों का निरास, परमाणुरूपनित्यद्रव्यविचार, आकाशद्रव्यविचार, कालद्रव्यविचार, आत्मद्रव्यवाद, गुणपदार्थविचार, कर्मपदार्थ-विचार, समवायपदार्थविचार, अभावपदार्थविचार और नैयायिकाभ्युपगत षोडशपदार्थविचार।

६.प्रोफेसर वीरसागर जैन (प्राध्यापक- श्री लालबहादुर संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली)

पञ्चम परिच्छेद- प्रमाणफलस्वरूपविचार, प्रमाण का फल प्रमाण से कथञ्चित् भिन्न है और कथञ्चित् अभिन्न है, इसकी सिद्धि । (१) वेदापौरुषेयत्वविचार, (२) नैयायिकाभिमत सामान्यस्वरूपविचार, (३) ब्राह्मणत्वजातिनिरास, (४) क्षणभंगवाद, (५) वैशेषिकाभिमत आत्मद्रव्यविचार और (६) जय-पराजय व्यवस्था।

६.प्रोफेसर अनेकान्त कुमार जैन (प्राध्यापक- श्री लालबहादुर संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली)

षष्ठ परिच्छेद - प्रमाणाभास, संख्याभास, विषयाभास, फलाभास, स्मरणाभास, प्रत्यभिज्ञानाभास तर्काभास, अनुमानाभास, हेत्वाभास, दृष्टान्ताभास, आगमाभास आदि आभासों का विवेचन, जय-पराजय व्यवस्था, नय और नयाभास का विवेचन, सप्तभंगीनयविवेचन और पत्र विचार।

८.डॉ. योगेश कुमार जैन (प्राध्यापक- केन्दीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर)

(१) भूतचैतन्यवाद, (२) सर्वज्ञत्वविचार, (३) ईश्वरकर्तृत्वविचार (४) मोक्षस्वरूपविचार, (५) केवलिभुक्तिविचार, (६) स्त्रीमुक्तिविचार।

शिक्षण पद्धति (Teaching Procedure): इस कार्यशाला में प्रतिदिन पूर्वाह्न ९.३० बजे से सायं ५ तक कक्षायें चलेंगी और प्रति कक्षा का समय ६० मिनट होगा। प्रत्येक कक्षा के अन्त में १५ मिनट्स का समय प्रश्नोत्तर के लिये होगा। अध्यापन के समय मूल ग्रंथ के अलावा उपलब्ध भाष्य, वृत्तियों, टीकाओं तथा अनुवाद को भी अर्थ के प्रकटीकरण में महत्त्व दिया जायेगा। अन्य परम्पराओं की ज्ञानमीमांसीय अवधारणाओं के साथ प्रस्तुत ग्रंथ में प्रतिपादित ज्ञान विषयक अन्य अवधारणाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन पर विशेष बल दिया जायेगा ताकि प्रतिभागियों को किसी विशेष अवधारणा (concept) का समग्र और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त हो सके।

Registration:

The participants are requested to ensure their registration to the workshop before 31st August 2024.

Registration Fee:

There is no fee for Registration. It is absolutely free.

Venue & Time of the Workshop:

Conference Hall, Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi

Programme Schedule of the workshop

The classes will be run daily from 9.30 am to 5.00 pm

Lodging and Fooding:

Lodging and Fooding will be free for outstation participants. Their's staying arrangements will be made on the campus itself. Local participants will be provided lunch and snacks daily throughout the workshop.

T A: No T A will be admissible to participants. They have to attend the workshop on their own.

Organization of the Workshop

Patron in chief	**: Sh. Dhanpat Raj Bhansali**
Patrons	**: Sh. Kunwar Vijayanand Singh, Sh. Indrabhooti Barar**
	Sh. Sudev Barar, Sh. Satish C. Jain
Director of the Workshop	**: Dr. S. P. Pandey**
Co-coordinator	**: Dr. O. P. Singh**
	Dr. Rekha (Rapporteur & Technical Assistant)
	Sh. Rajesh Kr. Chaubey (Financial Application)

Contact:

All communication in this regard should be addressed to:

Dr. S. P. Pandey
Director of the Workshop
Parshwanath Vidyapeeth, I.T.I. Road, Karaundi, Varanasi

Mob. +91 9936179817, 9450546617

E-mail: sp.pandey@pv-edu. org, pvpvaranasi@gmail.com